बावा कैलख देव जी की महिमा



प्रकाशक

बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी, ठठर

जम्मू कश्मीर

समर्पणम्

जय बावा कैलख देव जी



बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी
के पूर्व प्रधान
स्व. श्री सोहन लाल शर्मा
को
यह पुस्तक सादर समर्पित

बावा कैलख देव जी की महिमा

लेखक

पं॰ रोहित शास्त्री

फलित ज्योतिषाचार्य

महन्त बावा कैलख देव स्थान

प्रकाशक

बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी, रायपुर ठठर जम्मू।

प्रकाशक -
बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी, रायपुर ठठर, जम्मू।
पिन - 181122

प्रथम संस्करण 2016

मुद्रक:-
हरे कृष्णा कम्पोज़िंग हाऊस
मोबाईल 9419784385

मूल्य :- 20.00 रुपये

विशेष:-

1. सेठ बिरादरी वार्षिक मेल – वैसाखी पर
2. फवा महाजन बिरादरी मेल – बुध पूर्णिमा पर
3. झीवर बिरादरी वार्षिक मेल – गुरू पूर्णिमा पर

प्राक्कथन

ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

भारतीय वाङ्मय मे अन्यान्य क्षेत्रों में विभिन्न शोध हुए हैं जिन्होंने आधुनिक विचारकों को भी नई दिशा दी है। हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्पराएँ, वैदिक मान्यताएँ और पूजा पद्धतियाँ प्रकृति केन्द्रित रहीं हैं। प्रकृति से लेना और प्रकृति को देना इसका प्रधान अङ्ग है। पेड़, पौधे, जीव, जन्तु, लता, वृक्षादि सभी को मनुष्य का परममित्र बताया गया है। मनुष्य सदियों से इन सभी से उपकृत रहा है। प्रकृति ने मनुष्य पर कोटिशः उपकार किए हैं, मनुष्य कभी इन उपकारों को भूल न जाए अतः ऋषियों ने प्रकृति की पूजा का उपदेश किया। वट, पीपल, आम, नीम, आँवला, उदुम्बर (ऊमर) आदि वृक्षों को पूज्य बनाकर इन्हें काटने का निषेध कर दिया। विज्ञान कहता है कि ये वृक्ष सर्वाधिक उपकारी हैं।

इसी प्रकार गाय को सर्वश्रेयस्करी सिद्ध करते हुए तैतीस करोड़ देवताओं का वास गाय में बताया और इसे भी पूज्या माना। विज्ञान कहता है कि देशी गाय का दूध, दही, घी, मट्ठा, मक्खन और इसके दूध से बने हुए विभिन्न व्यंजन अमृत के समान तथा बहुत से रोगों का नाश करते हैं। गाय का गोबर एवं गोमूत्र ही न जाने कितने रोगों का नाश करते हैं। हमारे ऋषियों ने प्रत्येक देवी-देवता से एक न एक पशु पक्षी को जोड़कर प्रकृति प्रेम का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। यथा-

विष्णु	-	गरुड़
ब्रह्मा	-	कमल
शिव	-	वृषभ
लक्ष्मी	-	उलूक (उल्लू)
ब्रह्माणी	-	हंस
पार्वती	-	सिंह
गणेश	-	मूषक (चूहा)
कार्तिकेय	-	मयूर (मोर)
इन्द्र	-	ऐरावत हाथी
दुर्गा	-	सिंह

कुछ देवी-देवताओं को अवतारों के रुप में वर्णित करके प्रकृति प्रेम दिखाया गया है-

विष्णु- 1. कच्छापावतार, 2. मत्स्यावतार,
3. वराहावतार, 4. हयावतार आदि।

कहने का तात्पर्य यह है कि हर एक परम्परा के पीछे प्रकृति प्रेम का अनूठा रहस्य छुपा है। ईश्वरीय शक्तियों का आलम्बन करके प्रकृति से प्रेम करना सिखाया है तो प्रकृति को हानि पहुँचाने पर देवी-देवताओं के प्रकोप एवं क्रोध का भय दिखाकर प्रकृति को बचाए रखने का प्रयास भी किया है।

यूँ तो हम देखते-पढ़ते आये हैं कि गाय, बैल, सिंह शुनकादि की रक्षा का सन्देश बहुत मिलता है। किन्तु इनसे भिन्न कुछ ऐसे भी जीव हैं जो मानव ही नहीं अपितु किसी भी जीव के लिए मृत्यु या महाकाल हैं वे भी हमारे ऋषियों ने पूज्य माने हैं।

हम यहाँ चर्चा कर रहे हैं भगवान् शिव के गणों में श्रेष्ठ सर्पों की। सर्पों का दूसरा नाम है- नाग, अहि, पन्नग वेदोत्तर काल अर्थात् पौराणिक युग बहुतायत में नागों की कथाओं का वर्णन करता है। भगवान् विष्णु का शेषनाग की शय्या पर शयन तथा

श्रीकृष्ण का कालियनाग के फण पर नृत्य अति प्रसिद्ध है। वस्तुतः नागों का अस्तित्व क्षेत्र देवता, ग्रामदेवता, स्थान-देवता अथवा धन के संरक्षक देवता के रुप में है। नागों को मनुष्यों का सहयोगी दिखाया गया है न कि मनुष्य का शत्रु।

इस ग्रन्थ का प्रणयन भी इसी सोच के साथ कर रहा हूँ कि नागों से संबंधित बहुत सी भ्रान्तियाँ समाज में फैली हुई हैं इन्हें समाप्त करके वास्तविकाता को उजागर करना मेरा प्रथम प्रयास है। दूसरा विचार यह है कि भारत में कई स्थानों पर नागों की पूजा होती है, नागों के मन्दिर हैं किन्तु नागों से वास्तविक परिचय नहीं है।

तीसरा प्रयास यही है कि जीव-संरक्षण के प्रयासों को बढ़ाते हुए परम्पराओं को सच्चे अर्थों में समझाा सकूँ कि नागों की पूजा करने से नागों को नहीं बचाया जा सकता। हमें उनके प्रति हिंसा या क्रूरता का भाव त्यागकर मित्रवत् आचरण करना चाहिए और यह तभी संभव है जब हम नागों के सभी पहलुओं को जान पायेंगे। इस लेखन कार्य में मेरा सहयोग करने तथा प्रकाशन हेतु मुझे प्रेरित करने वाले मेरे परम पूज्य गुरुचनों, ज्येष्ठ जनों तथा कैलख देव प्रबन्धक कमेटी के माननीय सभा सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन एवं आभार ज्ञापित करता हूँ। विशेष रूप से मैं सर्वतोभावेन अपने गुरू जी प्रो. रामानुज देवनाथन् जी का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा भरपूर मार्गदर्शन किया और मैं यह कार्य कर सका। धन्यवाद!

पं॰ रोहित शास्त्री

आओ संकल्प करें

समाज को सतर्क, शिक्षित, सम्पन्न, स्वाभिमानी व आधुनिक परन्तु सनातन परम्पराओं से प्रतिबद्ध बनाने हेतु हम संकल्प करते हैं कि–

1. दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है इसे निर्मूल (समाप्त) करने हेतु अपने परिवार में दहेज स्वीकार नहीं करेंगे।

2. किसी कार्य पर कॉकटेल पार्टी (शराब) का न ही आयोजन करेंगे न ही उसमें भाग लेंगे।

3. मांसाहार के प्रचलन में भागीदार नहीं बनेंगे।

4. बारातियों की संख्या कम करेंगे।

5. विवाह एवं अन्य शुभ कार्य कम खर्चीले, सादा, पवित्र एवं डोगरा (ब्राह्मण) परम्परानुसार ही करेंगे।

6. मृत्यु होने पर शोक के समय अर्थी के पीछे बैन्ड बजाने के रिवाज, दसवें पर भोजन तथा सम्बंधियों द्वारा खर्चा कराने तथा शोक की समाप्ति पर सम्बंधियों को पकवान/भोजन आदि बनाने का प्रचलन समाप्त करेंगे।

7. हम पंडितों तथा पुरोहितों से निवेदन करते हैं कि वैदिक विधि अनुसार विवाह इत्यादि सम्पन्न करवाएंगे एवं समाज के सभी वर्ग विशेषकर दलित वर्गों के शुभकार्यों को भी विधि अनुसार सम्पन्न करवाएंगे।

8. अपने बच्चों को हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के साथ-साथ संस्कृत का भी ज्ञान करवाएंगे।

9. छुआछूत की कुरीति को समाप्त कर पूरे समाज को एकजुट करने के लिए कार्य करेंगे।

10. विधवा एवं अन्य बच्चों को सहायतार्थ प्रयास करेंगे।

11. प्रत्येक घर में गायत्री मन्त्र का जप, भगवान परशुराम जी की पूजा एवं गीता, रामायण इत्यादि का पाठ कर संस्कार युक्त वातावरण बनाएंगे ताकि हमारे बच्चे धर्म की अवहेलना करके अन्य मज़हबों (धर्मों) में शादी सम्बंध न करें। तथा परिवार के बड़ों का तथा घर की महिलाओं का सम्मान बना रहे।

12. अपने जन्मदिवस पर दस पौधे लगाएंगे।

13. प्रतिदिन एक सेवा कार्य करेंगे।

एतदर्थ सतत् प्रयास करेंगे।

सेवा में बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी, जम्मू

अनुक्रम

जम्मू कश्मीर में नाग

जम्मू शहर एवं आसपास के क्षेत्रों में भगवान् शिव की पूजा जिस-जिस स्थान पर होती है वहाँ नाग देवता अवश्य ही पूजे जाते हैं किन्तु विशेष रूप से प्रसिद्ध चार हैं- 1. शिवखोड़ी, 2. भद्रवाह, 3. अखनूर, 4. जम्मू।

जम्मू की लोक परम्पराओं में मान्यता है कि वासुकि नाग की वंश परम्परा में से जम्मू एवं आसपास के क्षेत्रों में कई नागों ने अपना निवास स्थान बनाया। द्विगर्त प्रदेश (डुग्गर) के प्राचीन इतिहास में नागराज वासुकि की वंश परम्परा में काईभैड़ चोरसूकालसूलूनसूधनसरमानसरचिलकमिलकसौंगली नामक चौरासी पुत्र पौत्रों का वर्णन मिलता है। इन सब में ज्येष्ठ पुत्र का नाम है काई देव और कनिष्ठ हैं भैड़ देव। वासुकि नाग क्षत्रिय वर्ण के हैं और इच्छाधारी माने जाते हैं। इनके कुल के नागों की ख्याति है कि वे स्वेच्छा से मानवादि योनियों में रूप धारण करते हैं तथा जल, स्थल और नभादि में विचरण करते हैं। वासुकिवंशी नागों के जम्मू में निवास करने सम्बंधी एक दन्तकथा प्रसिद्ध है-

"एक बार वासुकि नाग चर्मरोग से पीड़ित हुए उनके उपचार हेतु वैद्य आये उन्होंने कहा कि यदि कोई कैलास पर्वत से नदी लेकर आये तो उसके जल में स्नान करने के उपरान्त आपका यह रोग समाप्त हो जाएगा। वैद्यराज का वचन सुनकर नागराज वासुकि ने सभा बुलाई जिसमें समस्त अष्टकुली नागों को आमन्त्रित करके कहा कि आप लोगों में से जो कोई भी कैलास पर्वत से नदी लेकर आयेगा वह पुरस्कार स्वरूप जम्मू का राज्य प्राप्त करेगा। वासुकि का यह वचन सुनकर सभी नाग विभिन्न स्थानों से होते हुए कैलास की ओर प्रस्थान कर गए।

वासुकि नाग के कनिष्ठ पुत्र भैड़देव जिन्हें वासुकि का विशेष स्नेह प्राप्त था वे अपनी बुद्धिमत्ता से सर्वप्रथम नदी को अवतरित करने में सफल हुए। उन्होंने सूर्यपुत्री तवी को जम्मू की ओर प्रवाहित किया। फल स्वरूप उन्हें जम्मू का राज्य प्राप्त हुआ। दूसरी तरफ वासुकि के वरिष्ठ पुत्र काई देव कमण्डलु में जल भर कर ला रहे थे। उन्हें लगा कि वे ही सर्वप्रथम पहुंचेंगे किन्तु तवी नदी के प्रवाह का समाचार मार्ग में ही मिलने पर वे क्षुब्ध हुए। तब उनके क्षोभ की शाँति हेतु वासुकि ने उन्हें भी नदी प्रवाहित करने की अनुमति दी जिसके परिणामस्वरूप चन्द्रभागा नदी का अवतरण हुआ। काई देव ने भैड़ देव से बलपूर्वक आधा राज्य ले लिया और दक्षिण क्षेत्र का राज्य भैड़ देव तथा उत्तरी क्षेत्र का राज्य काई देव को मिला। जैसा कि जम्मू की लोकगीतियों में भी वर्णित है-

जम्मुआं दा टिक्का भैड़े गी मिलेया, अखनूरे दा काई।
बिच तवी दे भैड़ बसदा, अखनूर बसदा काई।
बिच जम्मुआं मिट्ठा पीर बसदा, बाबै कालका माई।। (पौंगर पृ० 15)

जब वासुकि के परिवार के साथ-साथ राज्य बटा तो वासुकि को बड़ा संताप हुआ। डोगरी के कारकों में वासुकि का यह दुःख आज भी सुनाई पड़ता है :-

जम्मू दा टिक्का पैड़ गी मिलया ते अखनूर दा राजा काई।
वण्डी दित्ता ए राज जम्मुआ दा, वासुक आखेआ न पाओ दुआई।।
(कारक)

इनके अतिरिक्त अन्य जो पुत्र पौत्र जहाँ-जहाँ पहुंचे वे वहीं के निवासी हो गए। यथा सुजान देव, मिलक देव, चालदेव, सुरगल देव ने भैड़ देव की राजधानी साम्बा में निवास किया। उसी वंश परम्परा के नागदेवता हैं बावा कैलख देव। इन्होंने ठठर रायपुर गाँव (दुमाना) में अपना स्थान बनाया जो कि आज भव्य रूप में विद्यमान है। अलहण देव रियासी और तुलहण देव ने कश्मीर में अपना स्थान बनाया।

बावा कैलख देव जी

वर्तमान में जम्मू नगर में उत्तर की तरफ नागदेवता का एक विशाल मन्दिर विद्यमान है। मान्यता है कि यह भी वासुकि नाग के पुत्रों में से एक है। यह स्थान बावा कैलख देव नाम से प्रसिद्ध है। इनके प्रकटीकरण की कथा भी अतीव रोचक है। जिस समय उपरोक्त घटनाक्रम हुए उस समय बावा कैलख देव ठठर ग्राम पहुंचे थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि एक तरफ तवी नदी का प्रवाह हो गया है और दूसरी ओर चन्द्रभागा (चिनाब) भी प्रवाहित हो गई है और दोनों तरफ पर्याप्त मात्रा में जल ही जल है। भाईयों के परस्पर बँटवारे का समाचार भी उन्हें मिला। अन्ततोगत्वा उन्होंने इसी स्थान पर विश्राम करना उचित समझा।

बावा कैलख देव जी के वर्तमान निवास स्थान पर प्रकटीकरण के समय भारी जंगल था। इस स्थान पर सेठ ब्राह्मण जाति के ग्वाले पशु चराते थे। दन्त कथा के अनुसार बावा जी प्रतिदिन लीलापूर्वक इन ग्वालों के साथ कबड्डी आदि खेल खेलते, शाम को चले जाया करते थे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हो गया। ग्वालों ने अपने कबीले में चर्चा की कि एक सुन्दर युवक प्रतिदिन हमारे साथ खेलता है, उसकी टोली कभी नहीं हारती और वह बालक बड़ा शक्तिशाली है। सेठ कबीले के सरदार और वरिष्ट जनों ने विचार किया कि यह युवक कौन हो सकता है? संदेह व्यक्त किया गया कि यह युवा बालक किसी दूसरे कबीले का जासूस (गुप्तचर) हो सकता है और यह जासूसी करके हमारे पशुधन को भी हानि पहुँचा सकता है। निर्णय लिया गया कि अगले दिन उस जगह को कबीले के अंगरक्षक घेर लेंगे और उस युवक की सारी गतिविधियों का जायज़ा लेंगे अथवा उसे पकड़ लेंगे। निर्णयानुसार ऐसा ही हुआ। बावा जी जब खेल समाप्त होने पर कपड़े पहनने लगे तो

घेरा बन्दी करके सतर्कता से उन्हें पकड़ में लिया गया। बावा जी चमत्कारिक रूप से लुप्त हो गए। इस पर ग्वाले व दूसरे पकड़ने वाले बन्धु आश्चर्यचकित हो गए।

उसी समय आकाशवाणी हुई कि "मैं कैलख देव हूँ और नाग वंशी वासुकि नाग का बेटा हूँ। कुछ समय पश्चात् मुझे आपके गाँव रायपुर में प्रकट होना था परन्तु आप लोगों ने शीघ्रता की। आज से यह जगह मेरा निवास स्थान होगी और मुझे क्षेत्र (बनी) के रूप में भेंट करनी होगी। इस स्थान पर कोई खेती आदि नहीं कर सकता है अथवा इस पर किसी का अधिकार नहीं होगा। आज से आपका वंश मुझे कुल देव मानेगा और पूजा इत्यादि की जिम्मेदारी भी निभाएगा।" बावा जी के आदेशानुसार रकवाल राजपूत बिरादरी ने बनी के रूप में इस स्थान को बावा जी को भेंट किया क्योंकि यह स्थान इस समाज के स्वामित्व का था।

वैदिक रीति के अनुसार बावा जी के लुप्त होने के स्थान पर आकृति रूप में प्रतिकृति (मोहरा) की स्थापना की गई। इस मोहरे (मूर्ति) पर पगड़ी बाँधे आदमी, नाग और शिवलिंग आदि की मूर्तियाँ अंकित हैं। सदियों पहले प्रकटीकरण के समय से आज तक सेठ बिरादरी बावा जी की पूजा तथा इस स्थान की देखरेख की जिम्मेदारी निभा रही है।

बावा जी को कुलदेवता मानने वाली बिरादरियों के रीति रिवाज़

बावा कैलख जी को कुल देवता मानने वाली बिरादरियों (समाजों) की सूची इस प्रकार है-

1. सेठ ब्राह्मण बिरादरी
2. फवे महाजन बिरादरी
3. नरगोत्रा क्षत्री बिरादरी
4. सकोच झीवर बिरादरी
5. मगोत्रा ब्राह्मण बिरादरी
6. पाधा ब्राह्मण बिरादरी
7. चूड़ामणी आचार्य बिरादरी
8. वारणा तरखान बिरादरी
9. मेहता ब्राह्मण बिरादरी
10. रैणा ब्राह्मण बिरादरी

फवे महाजन बिरादरी के अखिल भारतीय प्रधान लाला हरबंस लाल शाल वाले जो कि जम्मू शहर के ही निवासी हैं ने बताया कि उनके एक पूर्वज किसी मुसलमान राजा के वज़ीर (मंत्री) थे। उस राजा ने जम्मू क्षेत्र के किसी हिन्दू राजा से युद्ध छेड़ दिया। हिन्दू राजा की सेना को भारी नुकसान हुआ। वह भागा-भागा बावा कैलख देव जी की शरण में आया और बचाओ-बचाओ की प्रार्थना करने लगा। रात को फवे बिरादरी के उस वज़ीर को बावा जी ने दर्शन दिए और अगले दिन हिन्दू राजा पर हमला न करने की हिदायत की। वज़ीर ने सपने की बात मन का वहम मान कर बावा जी का आदेश टाल दिया और दूसरे दिन प्रातः फिर युद्ध छेड़ दिया। हिन्दू राजा की सेना का पुनः काफी नुकसान हुआ। हिन्दू राजा फिर भाग कर बावा जी की शरण में आया। बावा जी क्रोध में आ गए। फवे वज़ीर को साक्षात् दर्शन देकर फिर

से अपनी बात दोहराई। परन्तु वज़ीर ने राजनीतिक उसूलों के तहत "हारते हुए शत्रु को क्षमा करना उचित नहीं है" की बात पर अमल करते हुए अगले दिन प्रातः हमला करके हिन्दू राजा का वध कर दिया। इस पर बावा जी बड़े क्रोधित हुए और फवा वजीर के वंशजनों को दुःख देने लगे। यहाँ तक कि उस वंश की उत्पत्ति रुक गई और सुख सम्पत्ति का भी दिवालिया हो गया।

इस प्रकोप के कारण वंशजनों ने देवताओं की शरण में जाना शुरू कर दिया। किसी देवता ने पशीन गोई (कन निकाले) कि आपको बावा कैलख जी का प्रकोप है। आप बावा जी के स्थान पर जाकर माफी मांगो और बावा जी को कुलदेव मानकर उनकी सेवा में जुट जाओ फिर सब ठीक हो जाएगा। इस तरह इन पूर्वजों ने बावा जी की शरण ली और कुलदेवता मान कर आज तक सेवा करके सुख-शाँति का आनन्द भोग रहे हैं।

नरगोत्रा बिरादरी के प्रधान श्री हरि कृष्ण जी, निवासी ऊधमपुर ने बताया कि जो फवे बिरादरी की कथा है, वही हमारी है। हमारे एक पूर्वज उस मुसलमान की सेना में पदाधिकारी थे। उनको भी बावा जी ने आदेश दिया था। उन्होंने भी बावा जी की आज्ञा का पालन नहीं किया और बावा जी के प्रकोप का शिकार बने। जब वह बावा जी को कुलदेव मान कर सेवा करने लगे तब सुख-शान्ति वापिस लौटी। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि पहले उनके पूर्वज नारोवाल नामक इलाके में रहते थे और फिर जम्मू तहसील के जगटी गाँव में रहने लगे। वहाँ से निकल कर हमारे परिवार भिन्न-भिन्न स्थानों पर चले गए हैं। हमारे परिवार व्यापार तथा शासकीय सेवाओं में ही अधिक है।

श्री बिहारीलाल जी (झीवर) निवासी पुरखू ने बताया कि हमारी बिरादरी के कई घरों में बावा जी के स्थान हैं। जब परिवार के किसी व्यक्ति में बावा जी प्रवेश करते हैं तो उस परिवार के लोग वैदिक रीति के अनुसार बावा जी की पूजा-अनुष्ठान करते हैं। एक संगल (झुंड़ा) बावा जी के स्थान में स्थापित मूर्ति से

स्पर्श करके घर में रख देते हैं। जिस व्यक्ति में बावा जी प्रवेश करते हैं, वह चेला कहलाता है।

चूड़ामणि बिरादरी के एक सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री कुलदीप शर्मा, पुत्र मुलखराज शर्मा जी निवासी पीरमिठ्ठा ने भेंट में बताया कि हमारे पूर्वज अम्ब गाँव में रहते थे। वहाँ अब बावा जी का स्थान है। हम वहाँ से संगल स्पर्श करके लाए हैं और मोहल्ले में मंदिर बनाया है। उन्होंने कहा कि मुझे पता नहीं बावा जी हमारे कुलदेवता कैसे बने।

मगोत्रा बिरादरी की मेल कमेटी के उप-प्रधान श्री तारा मणी जी निवासी मुट्ठी ने बावा कैलख जी को बिरादरी का मुख्य देवता बताया। उन्होंने भी कहा कि बावा जी को कुलदेवता मानने का कोई भी कारण उन्हें पता नहीं है।

कालीदास पाधा ने बताया कि "हमारी जाति की एक महिला के पति का स्वर्गवास हो गया था। उस महिला ने सती होने का निर्णय कर लिया। उस महिला का एक तीन साल का बच्चा भी था। लोगों ने उस छोटे बच्चे का वास्ता दिया और सती न होने की सलाह दी। इस पर उस महिला ने बच्चा उठाकर बावा कैलख जी के मन्दिर (गांव कंगरेल) में रख दिया। उस समय वहां एक नाग प्रकट हुआ और उसने बच्चे से लिपटकर फण बच्चे के सिर पर रख दिया। यह दृश्य देखकर लोगों ने बावा कैलख जी का गुणगाण किया और दिव्य प्रार्थनाएँ करने लगे, उनकी प्रार्थनाओं से नाग देवता लुप्त हो गए और वह बालक समय के अनुकूल बड़ा हुआ। उस सती का मन्दिर बावा जी के मन्दिर के निकट बना है हमारी जाति बावा जी के रीति रिवाज़ों का पूरा पालन करती है। बावा जी का चढ़ावा सेठ ब्राह्मण को देते हैं।"

श्री रवि वारणा, बरनाई निवासी ने बताया कि वारणा (तरखान) जाति के लोग भी बावा जी को कुल देवता मानते हैं और मुण्डन इत्यादि बावा जी के रीति रिवाज़ के अनुसार ही करते हैं।

इसके अलावा रैणा ब्राह्मण भी बावा जी को कुल देवता मानते हैं। कटल बटाल के पंडित देशबंधु जी ने बताया कि उन्होंने यहाँ से एक पिण्डी लेकर छोटा सा मन्दिर गाँव में बनाया है।

बावा जित्तो स्थान झिड़ी के महन्त पं॰ हरदत्त मेहता ने बताया कि उनकी बिरादरी के लोग भी बावा जी को कुल देवता मानते हैं और प्रत्येक शुभ अवसर पर बावा जी का पूजा-पाठ आदि करते हैं और बावा जित्तो स्थान झिड़ी में पिण्डी रूप में बावा जी की प्रतिमा स्थापित है जहाँ प्रतिदिन पूजादि की जाती है। पूजा हेतु कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है अतः वे नियम इस प्रकार हैं:-

1. हर शुभ काम के अवसर पर बावा जी का ध्यान अथवा पूजा करना आवश्यक है और इसके उपरान्त सेठ ब्राह्मण की पूजा करके अन्न-दक्षिणा देकर सम्मान करना आवश्यक है।

2. लड़के अथवा लड़की की शादी के उपरान्त बावा जी की चार परिक्रमा (रकैदें फिरना) जरूरी है। इसके लिए पति कच्चे सूत का धागा हाथ में लेकर, पत्नी पीछे जौल थाम कर चार परिक्रमा करते हैं। भीगे हुए चने, बबरियां, सफेद पोशाक या सवा मीटर सफ़ेद कपड़े की भेंट भी आवश्यक है।

3. लड़के के पैदा होने पर तुरन्त बावा जी के नाम सवा दो किलो गुड़ मनसना ज़रूरी है जो किसी भी सेठ ब्राह्मण को दें या बावा जी के मन्दिर में चढ़ाएं। लड़के के मुण्डन संस्कार के दिन माँ को अंगीठी में गोटे (उपले) की धूनी जलाकर सिर पर रखकर अथवा सफेद चादर की गिद्दी बांधकर बावा जी के स्थान पर आना पड़ता है। पहले बच्चे की सूरत में दो बकरे बावा जी को भेंट करने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त भीगे चने अथवा रोट भी चढ़ाना पड़ता है। पिता पुत्र को कन्धों पर उठाकर हाथ में सूत का कच्चा धागा

पकड़कर और बच्चे की माँ सिर पर मिट्टी की धौंकती अंगीठी उठाकर चार परिक्रमा करती हैं। इसके उपरांत बकरे के कान का खून निकाल कर बच्चे को तिलक लगाया जाता है। बच्चे के बालों का एक गुच्छा दो पत्थरों से काटकर मीठे रोट पर रखकर दक्षिणा इत्यादि के साथ बावा जी को भेंट की जाती हैं। इसके उपरांत बच्चे के बाल उस्तरे से काट कर उसे पहनाए गए कपड़े उतार कर माँ और बच्चे को पीले रंग के वस्त्र पहनाए जाते हैं। बाद में यथाशक्ति सेठ ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाता है।

4. लड़का पैदा होते ही माँ को पहने हुए कपड़े तत्काल उतार कर सफेद चादर की गिद्दी पहननी पड़ती है। बच्चे को भी सफेद कपड़ा पहनाना होता है। यह क्रम ढाई साल यानि मुण्डन संस्कार तक जारी रहता है। मुण्डन संस्कार तक बच्चे के सिर में कंघी नहीं करनी होती है। माँ तथा बच्चे को किसी भी खुशबूदार तेल, फूल आदि का प्रयोग न करना और यहाँ तक कि सिर पर सिन्दूर भी नहीं डालना होता है। ढ़ाई साल की इस अवधि में ब्रह्मचार्य का पालन भी जरूरी है। जब तक बच्चे के मुण्डन न हों, माँ और बच्चा बावा जी की बनी में प्रवेश नहीं कर सकते । शाकाहारी श्रद्धालु भेंट किए हुए बकरे मन्दिर में छोड़ सकते हैं।

5. सेठ बिरादरी द्वारा यह निर्णय लिया गया कि बिरादरी के मेल का एक दिन निश्चित कर दिया जाए ताकि एक निश्चित दिन सभी श्रद्धालु बावा जी के दर्शन करके आशीर्वाद ले सकें। सबकी सुविधा को देखते हुए 13 अप्रैल वैसाखी के पावन पर्व को मेल के लिए निश्चित किया गया है ताकि इस नव वर्ष से पहले दिन सपरिवार बावाजी के स्थान पर उपस्थित हो कर दर्शन करके बावा जी का आर्शीवाद प्राप्त कर सकें।

ऊपर लिखी तमाम परम्पराओं का अनिवार्य रूप से पालन करना हर श्रद्धालु के लिए जरूरी बताया गया है। सेठ ब्राह्मणों के लिए भी इन सभी परम्पराओं का पालन

करना ज़रूरी है। सेठ ब्राह्मण की पूजा के लिए सेठ बिरादरी के किसी भी पुरुष को चुना जा सकता है। समय की गति के साथ अब सभी श्रद्धालु बिरादरियों/भक्तों ने बावा जी को मानने की परम्पराओं में परिवर्तन किया है।

सेठ बिरादरी में किसी एक परिवार का ढ़ाई साल की उम्र का बच्चा होना ज़रूरी है। उसके साथ 22 दिन की आयु के ऊपर सभी बच्चों के मुण्डन संस्कार हो सकते हैं। सफेद गिद्दी के स्थान पर सफेद खिलका, सफेद साड़ी या सफेद कपड़े माँ पहनती है। बच्चे को काले रंग के कपड़े भी पहनाए जा सकते हैं। ब्रह्मचर्य की रीति अब समाप्त हुई दिखती है।

श्री गुलशन गुप्ता, पुत्र धर्म चन्द गुप्ता निवासी अखनूर के मुताबिक उनकी बिरादरी ग्यारह महीने पूरे होने पर मुण्डन संस्कार करती है। इस दौरान माँ और बच्चे को सफेद रंग के वस्त्र ही पहनाए जाते हैं। कुछ परिवार बकरे की जगह हलवा भेंट करते हैं। पहले समय में पति-पत्नी बातचीत न करके ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। परन्तु यह प्रथा अब लगभग समाप्त हो गई है। हर वर्ष बुध पूर्णिमा के दिन फवा बिरादरी की मेल लगती है। नरगोत्रा बिरादरी के प्रधान ने बताया कि उनकी बिरादरी में लड़का पैदा होने पर बच्चे को घर के पुराने वस्त्र ही पहनाए जाते हैं व नए वस्त्र केवल ननिहाल से लिए हुए ही पहनाए जा सकते हैं। बच्चा पैदा होन पर कोई दो त्योहार बीत जाने पर मुण्डन संस्कार कर सकते हैं।

6. गाय-भैंस पालने वाले श्रद्धालु भी गाय-भैंस के बच्चा देने पर इक्कीस दिन बाद किसी रविवार, मंगलवार या बृहस्पतिवार के दिन चारों थनों का दूध दुहकर मीठे रोट के साथ भेंट करते हैं। जब तक दूध, घी आदि बावा जी को भेंट न किए जाएं, इन को अन्न के साथ नहीं मिलाया जाता है। इस रस्म को सुच्चा चुकाने की रस्म कहते हैं।

7. खारका - यह फसली पूजन परम्परा है। गन्धम तथा मक्की जम्मू इलाके की दो प्रसिद्ध फसलें हैं। यह छः माही फसलें कहलाती हैं। इसलिए हर 6 माह बाद खारका दिया जाता है। इसमें मौसमी अन्न बनाकर सेठ ब्राह्मण को खिलाया जाता है। सेठ ब्राह्मण उपलब्ध न होने पर अन्न को मनस कर सुविधानुसार बाबा जी के मन्दिर में चढ़ाया जाता है।

विवाहित महिलाओं को बावा जी के चरणों में उपस्थिति देते समय मुंह पर परदा (झुण्ड) करना ज़रूरी है। विवाहित स्त्रियों के लिए मन्दिर के अन्दर प्रवेश करना वर्जित है।

8. जम्मू का मुस्लिम समाज भी बावा जी को मान्यता देता है। यदि उनके कोई भी दूध देने वाला पशु जब दूध देना आरंभ करता है तो वे 11 दिन तक बावा जी को मंदिर में भेंट करके ही स्वयं पान करते हैं।

दिव्यसरोवर

बावा जी के मन्दिर के साथ बावा जी का तालाब भी है जिसे कैलख सरोवर कहा जाता है। इस कैलख सरोवर में स्नान करने से मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट दूर होते हैं। विशेष रूप से चर्मरोगों से निदान पाने के इच्छुकों को आकर्षक लाभ मिलता है। क्योंकि इस स्थान पर अपने पिता (वासुकि नाग) के चर्मरोग को ठीक करने के उद्देश्य से लाया गया जल भी बावा कैलख देव ने यहीं छोड़ दिया। इस जल का घर में छिड़काव करने से धन और सुख शान्ति में वृद्धि होती है। पशुओं को पिलाने से उनके रोगों का निर्वाण होता है।

सरोवर स्नान विधि-

जल को भारतीय धर्मशास्त्रों में वरुण देवता अथवा जल देवता के रूप में पूजा जाता है। वापी, कूप, तड़ाग (सरोवर) नदी आदि जल के प्रधान स्रोत होते हैं और विभिन्न व्रत-पर्वों पर इनमें स्नान करने का विशेष महत्त्व होता है। किन्तु यथाविधि और देश कालपरिस्थिति के अनुसार तथा धर्म शास्त्रीय परम्पराओं के अनुसार सरोवर वापी, कूप में स्नान करने हेतु निम्न लिखित आवश्यक निर्देश दिए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक श्रद्धालु को आवश्यक है। स्कन्दपुराण में स्नानविधि का निर्देश करते हुए कहा गया है-

स्नातव्यं तीर्थमुख्येषु सत्यमेतन्न संशयः।
चरेषु किंतु संविश्य स्थावरेषु बहिः स्थितैः॥

मुख्य-मुख्य तीर्थों में स्नान करना चाहिये। ऐसी विधि है भी, परंतु जो नदी आदि चर तीर्थ हैं- जिनके जल बहते रहते हैं, उन्हीं में भीतर प्रवेश करके स्नान आदि करना चाहिये। कूप-सरोवर आदि स्थावर तीर्थों में तो बाहर खड़े होकर ही स्नानादि करना उचित है।

स्थावरेष्वपि संविश्य तत्र स्नानं विधीयते।
न यत्र देवस्नानार्थं भक्तैः संगृह्यते जलम्।।
यच्चहस्तशतादूर्ध्वं सरस्तत्र विधीयते।
संवेशेऽपि क्रमश्चायं पादौ प्रक्षाल्य यद्बहिः।।
ततः स्नानं प्रकर्तव्यमन्यथा दोष उच्यते।

स्थावर तीर्थों में भी वहीं भीतर प्रवेश करके स्नान करने का विधान है, जहाँ भक्त पुरुष देवता को स्नान कराने के लिये जल न लेते हों तथा जो सरोवर देवस्थान से सौ हाथ से भी अधिक दूर बनाया गया हो। उसके भीतर प्रवेश करने का भी यह एक क्रम है कि पहले बाहर ही दोनों पैर धोकर फिर कुण्ड में स्नान किया जाय, अन्यथा दोष बताया गया है।

मलं मूत्रं पुरीषं च श्लेष्मनिष्ठीवितं तथा।
गण्डूषमप्सु मुञ्चन्ति ये ते ब्रह्महभिः समाः।।

जो जल में मल, मूत्र, विष्ठा, कफ, थूक और कुल्ला छोड़ते हैं, वे ब्रह्महत्यारों के समान हैं।

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
निर्विकाराः क्रियाः सर्वाः स हि तीर्थफलं लभेत्।।

जिसके हाथ, पैर और मन भलीभाँति संयम में हों और जिसके द्वारा समस्त क्रियाएँ निर्विकार भाव से की जाती हों, वही तीर्थ का फल पाता है।

वृक्षारोपण

बावा कैलख देव का स्थान अत्यन्त रमणीय एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। बावा जी के स्थान पर हरियाली एवं नाना प्रकार के वृक्षों की उपस्थिति वातावरण को शुद्ध करती है। वृक्ष हमारे लिए सर्वदा उपकारी होते हैं, शास्त्रों का वाक्य है कि–

सेवितव्यं महावृक्षाः फलच्छाया समन्विताः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते।।

"सर्वदा महावृक्षों की सेवा करनी चाहिए, वे वृक्ष हमें फल एवं छाया प्रदान करते हैं और यदि दैववशात् (दुर्भाग्य) से फल न लगें तो वृक्षों की सुन्दर शीतल छाया को तो कोई नहीं रोक सकता।" अन्यत्र भी सूक्ति वाक्य कहते हैं **"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः"** अतः बावा जी के स्थान को चारों दिशाओं से वृक्षों से परिपूर्ण किया गया है। शताधिक (सौ से अधिक) प्रजातियों के विभिन्न वृक्ष, पुष्प, लताएँ परिसर की शोभा बढ़ा रहे हैं जिनमें फलदायी वृक्ष, आयुर्वेदिक उपयोग हेतु वृक्ष, जड़ी-बूटियाँ आदि लगे हुए हैं। इनमें से कुछ वृक्ष तो स्वतः प्राकृतिक रुप से ही उत्पन्न हुए हैं तथा कुछ वृक्षों को बावा कैलख देव प्रबन्धक कमेटी ने लगाया है। परिसर में विद्यमान समस्त वृक्षों का नामादि विवरण इस प्रकार है–

1. बोड़	2. केला	3. भदरीका	4. अपा ग्रास
5. सुर्न	6. अमरबेल	7. अशोक	8. भांग
9. कालमेघ	10. तुरमसोगा	11. घोड़वच	12. पाटला
13. चकवड़	14. मालझन	15. बेहड़ा	16. सेवराज
17. रोरी	18. मजीठ	19. हंसपदी	20. मघा
21. पपीता	22. गड़ीला	23. कतयाड़	24. कदम्ब
25. रीड़ा	26. सुख चैन	27. बेड़ा	28. गुलमोहर
29. गिलोय	30. विल्व	31. नीम	32. बेर
33. पलाश	34. दूर्वा	35. पीपल	36. तुलसी

37. अपामार्ग	38. धतूरा	39. आंवला	40. एरण्ड
41. वघरण्डी	42. विशाला	43. नागरमोथा	44. दुधकौरया
45. अर्क	46. अमलतास	47. ड़ीला	48. कचनाट
49. यवफल	50. कांस	51. अपराजिता	52. शतावरी
53. घृतकुमारी	54. अनाट	55. जामुन	56. काकनासा
57. खैर	58. कलिहारी	59. जंगली प्याज	60. कपूरकचरी
61. स्नूही	62. दन्ती	63. पिपरमेन्ट	64. वृहती
65. वृहती	66. कन्टकारी	67. चिरायता	68. रक्त अर्क
69. चित्रक	70. दमनक	71. अर्जुन	72. शरपुंखा
73. सांदन	74. शालपर्णी	75. अतिबला	76. तिलपर्णी
77. बुरांस	78. आड़ू	79. गुलाब	80. गेंदा
81. तमाखू	82. मरिच	83. अमरूद	84. आम
85. कीमर	86. रूमबल	87. सेब	88. नींबू
89. अर्गंल	90. टाली	91. सागबाज	92. सफेदा
93. तूत	94. अंगूर	95. लसूनी	96. खर्जुर
97. काली मूशली		98. जीवक ऋषभक	
99. जलनीम (ब्राह्मी)			

परिसर में लगे हुए उपरोक्त वृक्षों के अतिरिक्त भी निरन्तर वृक्षारोपण को प्रोत्साहन दिया जाता है। शास्त्रों में वृक्षारोपण की महिमा बतलाते हुए कहा गया है-

दश कूप समा वापी दश वापी समो ह्रदः।

दश ह्रदः समा कन्या दश कन्या समो द्रुमः॥

"दश कुएँ तुल्य फल एक वापी (बावड़ी) से, दश वापी तुल्य फल एक सरोवर से, दश सरोवर तुल्य फल एक कन्यादान से, दश कन्यादान से तुल्य फल एक वृक्षारोपण से होता है। अतः वृक्षारोपण हेतु भी बावा का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है।"

बावा कैलख देव स्थान में किए गये कार्य

बावा कैलख देव देवस्थान की व्यवस्था एवं प्रबन्धन हेतु समाज के धार्मिक एवं बुद्धिजीवी वर्ग की एक प्रबंधक कमेटी कार्यरत है जो पिछले कई वर्षों से देवस्थान का प्रबंधन कर रही है। कमेटी के कुछ प्रमुख कार्य एवं उपलब्धियाँ निम्नानुसार हैं:-

1. कैलख सरोवर का निर्माण सन् 2001 में किया गया जिसका उद्घाटन बावा बल्लो देवस्थान के प्रधान अर्चक (पंडित) स्व० देवराजशर्मा द्वारा किया गया।
2. वर्ष 2005 में तत्कालीन समाज कल्याण मंत्री (जम्मू कश्मीर राज्य) श्री मूलाराम द्वारा विद्युत् ट्रांसफार्मर प्रदान किया गया।
3. कैलख यज्ञशाला का निर्माण 2007 में कराया गया जिसका उद्घाटन तत्कालीन सड़क एवं भवन निर्माण मंत्री (जम्मू कश्मीर राज्य) श्री युगल किशोर शर्मा, रियासी के पूर्व विधायक ऋषि कुमार कौशल द्वारा किया गया।
4. वर्ष 2008 में कैलख वाटिका का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन जम्मू कश्मीर पुलिस के आई०जी०पी०, डॉ० एस०पी० वैद ने किया।
5. वर्ष 2008 में श्री शक्ति कुमार पाठक (ए०एस०पी० जम्मू कश्मीर पुलिस) ने वृक्षारोपण कार्यों का शुभारंभ किया।
6. वर्ष 2009 में कैलख सराय (धर्मशाला) की नींव प्रो० चमनलाल गुप्ता (भूतपूर्व रक्षाराज्यमंत्री भारत सरकार) एवं रायपुर दोमाना विधायक भारत भूषण जी ने रखी।
7. वर्ष 2011 में भव्य शिवालय का निर्माण कराया गया।
8. वर्ष 2012 में मन्दिर के महन्त पं. रोहित शास्त्री द्वारा 'भारतीय वाङ्मय में नाग' बावा कैलख देव की महिमा सहित प्रकाशन कार्य किया गया,

जिसका विमोचन विधायक प्रो. चमन लाल गुप्ता भू.पू. रक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार, श्री 108 हरे रामदास जी महाराज एवं बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी के सदस्यों द्वारा विमोचन किया।

9. वर्ष 2013 में माननीय स्वास्थ्य मंत्री (जम्मू कश्मीर राज्य) श्री शाम लाल शर्मा जी ने मंदिर परिसर में पार्क बनवाये।
10. वर्ष 2013 में माननीय सांसद मदन लाल शर्मा ने सराय के निर्माण में 5 लाख रुपये दान राशि दी और सराय का काम शुरू करवाया।
11. वर्ष 2013 में कैलख धर्म भास्कर पत्रिका का प्रकाशन किया गया। पत्रिका के विमोचन के अवसर पर भाजपा विधायक भारत भूषण, एस.एस.पी. शक्ति पाठक, भाजपा युवा नेता अनिल गुप्ता उपस्थित थे।
12. वर्ष 2014 में रायपुर दोमाना भाजपा विधायक श्री भारत भूषण जी ने मंदिर परिसर में 5 लाख की लागत से टाइल लगवाई।
13. वर्ष 2014 में कैलख सराय का उद्घाटन (जम्मू कश्मीर राज्य) महामहिम राज्यपाल एन.एन. वोहरा द्वारा किया गया।
14. वर्ष 2014 में बावा कैलख देव जी की भजनों की सी.डी. का विमोचन किया गया। मंडलयुक्त शांत मनु, रैडक्रास सोसायटी के सेक्रेट्री आर.के. सूरी, वी.डी.ओ. भलवाल ब्लाक जनाब तासिर लतीफी, डॉ. चन्द्रमौलि रैणा तथा उमेश पंगोत्रा द्वारा किया गया।
15. वर्ष 2015 में विधायक प्रो. चमन लाल गुप्ता भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार द्वारा इस कम्पनी द्वारा सरकारी फंड से पानी का टैंक का कार्य शुरू करवाया और कार्य प्रगति पर है।
16. वर्ष 2015 में पाँच भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया गया।
17. वर्ष 2015 में भाजपा राज्य सभा सांसद शमशेर सिंह मन्हास ने चल रहे सराय कार्य में 10 लाख राशि देने की घोषणा की।
18. हर वर्ष पंचांग कैलण्डर (कैलख धर्म दिवाकर) का प्रकाशन किया जाता है।

संत समागम

बावा कैलख देव स्थान परिसर में देश के सर्वोत्कृष्ट पीठों के पीठाधीश, शङ्कराचार्य एवं अन्य महामण्डलेश्वरों ने अपने आगमन से परिसर को सुशोभित किया है, उनमें प्रमुख हैं-

1. संत दिनेश भारती (जम्मू-कश्मीर) ने श्रीमद्भागवत कथा का वाचन किया।
2. विश्व हिन्दू परिषद् के डॉ॰ प्रवीण भाई तोगड़िया जी ने सभा को परिसर में संबोधित किया।
3. स्वामी प्रेमानन्द (हरिद्वार) ने अपनी अमृतवाणी से आशीर्वचनों को वितरित किया।
4. काञ्ची कामकोटि पीठाधीश्वर शङ्कराचार्य श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती जी ने अपना दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया।
5. आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक विश्वप्रसिद्ध संत श्री श्री रविशंकर ने अपनी अमृतमयी वाणी से परिसर को अलंकृत किया तथा वृक्षारोपण किया।
6. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ रामानुज देवनाथन् ने बावा कैलख का पूजन किया तथा शिवार्चन किया।
7. स्वामी विश्वात्मानंद सरस्वती, सुंदरबनी (जम्मू कश्मीर) ने अपने दिव्य प्रवचन दिए।
8. श्री बाल योगेश्वर जी महाराज द्वारा भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया गया।
9. श्री 108 हरे रामदास जी महाराज द्वारा राम अर्चना यज्ञ किया गया।

बावा कैलख देव स्थान के प्रगति कार्य के लिए बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी हर समय अग्रसर है। धन्यवाद!

डोगरी भजन

दूरा दूरा यात्रू आए बोलन जै जै कार।
ढोल बजादें नचदे गांदे कैलख दे दरबार।।
बावा तेरी जै होवे नाथ तेरी जै होवे.........

जिन्दे कम कुते नेई बनदे उन्दे कम बनांदे।
निर्धान ते दुखियारे गी ऐ माया कन्ने रजांदे।।
नाग देव दी सोनी माया हो सबगी मिलदा प्यार
बावा तेरी जै होवे नाथ तेरी जै होवे ....।।

जेड़ा कोई बावे दे औंदा सब किज लेई ऐ जंदा।
रोंदा-रोंदा औंदा जेड़ा असदा-असदा जंदा।।
बावा बड़ा दयालू लोको करदा बेड़े पार।
बावा तेरी जै होवे नाथ तेरी जै होवे........

अगे पिछे सजै खब्बै सोनी रास रचाई।
माएं दे घर वच्चड़े दिंदा भैनें दे घर भाई।।
धनैं दौलती कन्नै रजांदा जो आए दरबार।।
बावा तेरी जै होवे नाथ तेरी जै होवे.......

नाग वंशी ऐ बावा लोको ऐ बड़ा बलकारी
दूरा-दूरा लोक ने आंदे बड़े-बड़े दुःखआरी
दुखें कोला बचांदा, करदा खुशिएं दी भरमार।।
बावा तेरी जै जोवे नाथ तेरी जै होवे.........

डोगरी भजन

सोहना ऐ सोहना ऐ दरबार बावा कैलख दा।
मिलदा ऐ मिलदा इत्थे प्यार बावे कैलख दा।।
ठठरै दे विच आई बावे डेरा लाया ऐ।
मंगियां मुरादां पांदा जेड़ा इत्थे आया ऐ।।
खुल्ला ऐ, खुल्ला ऐ भंडार बावे कैलख दा।।.......
मेहर दा हत्थ रखी, बिगड़ी बनांदे न।
दौलत खजाने बुकां भरिएं लुटांदे न।।
मुकदा नहीं, मुकदा नहीं भंडार बावे कैलख दा।।......
दुखिएं दरिद्रैं गी गले कने लांदा ऐ।
रैहमतें दा अपनी ए मी बरसांदा ऐ।।
करी लैओ, रज्जी-रज्जी दीदार बावे कैलख दा।।.......
शाम सवेरे इत्थे जोत सच्ची जगदी।
पलें विच मनें आला नेरा दूर करदी।।
करी लाओ दर्शन बारम्बार बावे कैलख दा।।........
दुध कनें पुत्रें दा दाता मेरा बावा ऐ।
हितकारी, बलकारी, बलशाली बावा ऐ।।
मंगी लैओ दुध पूत्रें दा वरदान बावे कैलख दा।।......
मेरे जेहे लखां झोली अडिए पुकारदे।
बावा कैलख नाथ चरणें दा प्यार दे।।
सजेया रवे सजेया रवे दरबार बावे कैलख दा।.......

बावा कैलख पूजन

आह्वानम्- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

आसनम्- ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।

पाद्यम्- ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

अर्घ्यम्- ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमधुमन्तन्तऽऊर्मिम्।।

आचमनम्- ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

स्नानम्- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये।।

पयःस्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

शुद्धस्नानम्- ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्।

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्।।

घृतस्नानम्- ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभव्वक्षिहव्यम्।।

मधुस्नानम्- मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽऽअस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।।

शर्करास्नानम्- ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्येसन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्ययोरसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

उद्वर्तनस्नानम्- ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वाव्वसुः परिदधातु व्विश्ववस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। मित्रो-वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यरिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।

शुद्धस्नानम्- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽअश्विनः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

वस्त्रम्- ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः।
तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः।।

यज्ञोपवीतम्- ॐ यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तु तेजः।।

चन्दनम्- ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

अक्षतान्- अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी।

पुष्पाणि- ॐ ओषधीः प्रतिमोद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

दुर्वाङ्कुरम्- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

सुगन्धतैलम्- ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु व्विश्वतः।।

धूपम्- ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयम्वयंधूर्वामः।
देवानामसिवह्नितमꣳसस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्।।

दीपम्- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। ज्योतिः
सूर्यः सूर्योज्यातिः स्वाहा।।

नैवेद्यम्- ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

हस्तप्रक्षालनम्- ॐ अꣳशुना तेऽअꣳशुःपृच्यतां पुरुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

फलम्- ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व-ꣳ-हसः।।

ताम्बूलम्- ॐ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राब्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।

दक्षिणा- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाव्विधेम्।।

आरार्त्तिक्यम्- ॐ आरात्रिपार्थिवꣳरजः पितुरप्रायिधामभिः
दिवः सदाꣳसि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः।।
इदꣳहविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

पुष्पाञ्जलि- ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽ-एकराडिति तदप्येषशलोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

प्रदक्षिणा- ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।

शोडपोपचार विधि से ही यह पूजन करना चाहिए। इसके पूर्व में आत्म पूजा, गौरी गणेश, ईशान कलश पूजा, पञ्चदेव, नवग्रहादि पूजन करना चाहिए।

प्रार्थना

ॐ महानागाय विद्महे, वासुकेयाय धीमहि।

कैलखो नः प्रचोदयात्॥

सर्वे नागाः प्रीयन्तां मे ये केचित् पृथिवीतले॥

ये च हेलिमरीचिस्था येऽन्तरे दिवि संस्थिताः।

ये नदीशु महानागा ये सरस्वतिगामिनः।

ये च वापीतडागेषु तेषु सर्वेषु वै नमः॥

ॐ कुलानां शुभकृत्! शान्त! सर्वदा कुलवर्धक!

आयुर्बलं यशो देहि कैलखाय नमोऽस्तुते॥

आरती बावा कैलख देव जी

बावा कैलख जी दी आरती करां, चरणें सीस पसारी जी।
धूप धुखामा तिलक लगामां कन्न फुल्लें दी खारी जी।।

सनमुख ओइऐ दर्शन देओ करे अर्ज ऐ रूह बचारी जी।
पंज मुख नाग देव तू त्रलोकी दी जानकारी जी।।

बासुक नाग दा जाया तूं, तपस्वी ते बलकारी जी।
ठठर दे विच डेरा लाया दित्ती दुनियां तारी जी।।

दुध पुत्र दा दाता तू ऐं देव बड़ा चमत्कारी जी।
नीतें दियां मुरादां दिनां ऐ आओ सच्चीआं नीतां धारी जी।

धन-धन कोमल मन ऐ तेरा, दिन्नां गलती वसारी जी।
कार जो मन्नै तेरी उसगी बक्शें नेमतां भारी जी।।

हत्थ जोड़ी अस अरजां करदे सुनों देव बलकारी जी।
सब दा भला जी करेओ बावा रखेओ लाज हमारी जी।।

रखेओ लाज हमारी जी।

जयकारा बावा कैलख जी दा
बोल सांचे दरबार की जय

उपसंहार

पौराणिक कथाओं, आख्यायिकाओं, लोकोक्तियों एवं किंवदन्तियों के अनुसार स्पष्ट रुप से ज्ञात होता है कि सर्प, नाग हर तरह से मानव जाति के लिए उपकारी रहे हैं। हम वैदिक काल से लेकर आज तक के अन्यान्य उदाहरण, कथानक या प्रसंगों पर ध्यान दें तो ऐसे बहुत उदाहरण मिल जाएंगे जिनसे सर्पों के प्रति मानवीय क्रूरता प्रकट होती है। भारत के किसी भी कोने में कहीं भी ऐसी कथा नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि सर्पों ने कभी मानव जाति को भयभीत किया हो। आज का विज्ञान भी कृषकों, ग्रामीणों, सामाजिक संस्थाओं एवं बुद्धिजीवियों से सर्पों की रक्षा हेतु उपाय करने का आह्वान करता है। हमारे धर्मग्रन्थों ने सहस्त्रों उदाहरणों में सर्पों को मानव का अभिन्न मित्र व्यक्त किया है।

अतः हम यह संकल्प लें कि किसी भी प्रकार से सर्पों (नागों) की हत्या नहीं करेंगे। उनके प्रति क्रूरता त्यागेंगे। वे अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए कभी गलती से काटते हैं उनका स्वभाव हमलावर नहीं होता। विज्ञान तो कहता है कि 80 प्रतिशत से अधिक सर्पों में विष नहीं होता। अतः आवश्यकता है प्रकृति के और हमारे इस अभिन्न मित्र को बचाने की।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

सेवा, सहायता, संस्कार!

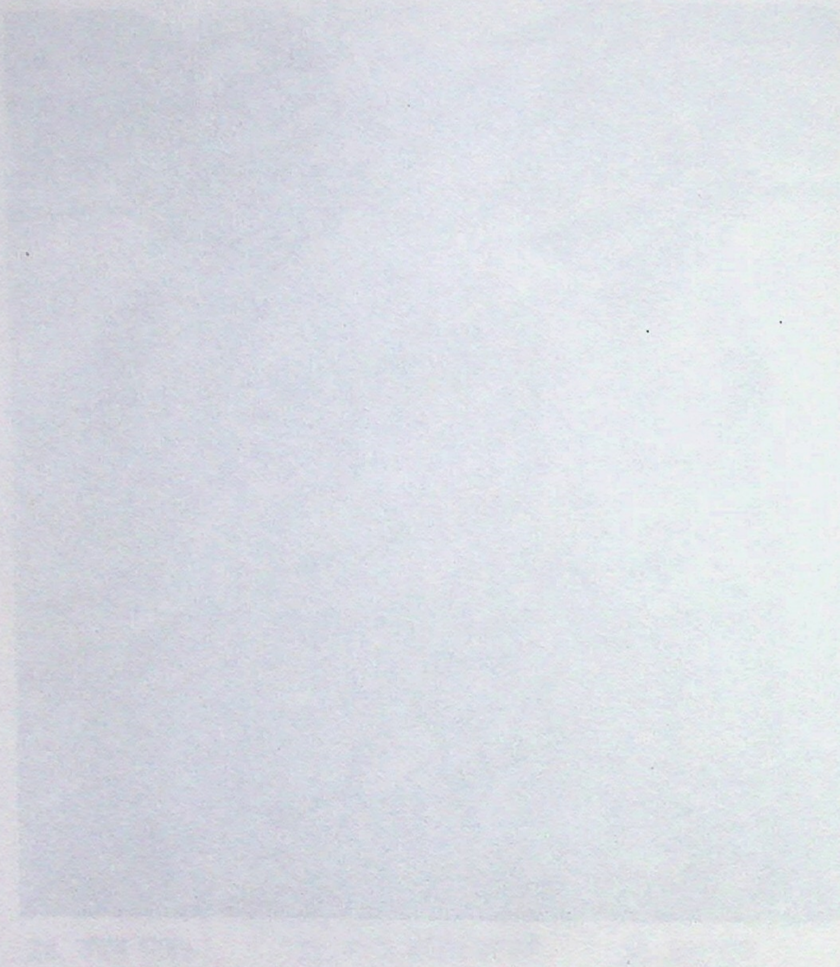
सौजन्य :- बावा कैलख देव प्रबन्धक कमेटी,

ठठर बनतालाब, जम्मू

1. पं. रामपाल शर्मा	2. हरवंसलाल गुप्ता	3. पं. शत्तिदत्त शर्मा
4. जनकसिंह रकवाल	5. सुभाष सिंह चिब	6. यश सेठ
7. सुनील राका	8. मास्टर रामरतन सेठ	9. राजेन्द्र सेठ
10. पवन गुप्ता	11. सतीश गुप्ता	12. गोपाल सेठ
13. मस्तराम सेठ	14. दलजीत सिंह जम्वाल	15. संजय गुप्ता
16. सुभाष सेठ	17. सुशील गुप्ता	18. भारतभूषण सेठ
19. जगदीश सेठ	20. रमेश शर्मा (पंच)	21. इन्दुभूषण सेठ
22. ओमकार सेठ	23. अरूण गुप्ता	24. राधा कृष्ण सेठ
25. शिव गुप्ता	26. असगर अली	27. पवन खजूरिया
28. उदय भास्कर	29. महंत रोहित शास्त्री	30. प्रभु सेठ
31. गणेश सेठ	32. नदान सिंह	33. मनमोहन सिंह



शंखचूड़ एवं वासुकी नाग प्रतिमा
भद्रवाह (जम्मू कश्मीर)





बावा कैलख देव मन्दिर परिसर में काञ्ची कामकोटि पीठाधीश्वर शङ्कराचार्य श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती जी।



बावा कैलख मन्दिर परिसर में बाएं से विश्व प्रसिद्ध संत श्री श्री रविशंकर जी।



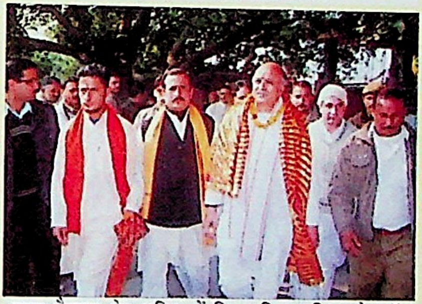
कैलख वाटिका के उद्घाटन के अवसर पर स्वामी प्रेमानंद जी, आई.जी.पी. डॉ. एस.पी. वैद व अन्य।



बावा कैलख देव परिसर में बावा बल्लो देवस्थान के प्रधान अर्चक (पंडित) स्व. देवराज शर्मा जी।



बावा कैलख देव मन्दिर में दाएं से स्वामी दिनेश भारती जी, यश सेठ एवं भारत भूषण सेठ।



बावा कैलख देव मन्दिर में विश्व हिन्दू परिषद् के डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया, साथ में शक्ति दत्त शर्मा।



कैलख यज्ञशाला उद्घाटन के अवसर पर मंत्री युगल किशोर शर्मा, पूर्व विधायक ऋषि कुमार कौशल।



प्रबंधक कमेटी प्रधान रामपाल शर्मा को चुनरी पहनाते हुए श्री श्री रविशंकर जी।



बावा कैलख मन्दिर परिसर में सांसद मदन लाल शर्मा, प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री एवं महंत रोहित शा स्त्री।



भूतपूर्व मन्त्री जम्मू कश्मीर गुलचैन सिंह चाढ़क को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए रोहित शास्त्री एवं डॉ. सी.एम. रैणा।



बावा कैलख विशाल दंगल के अवसर पर डिप्टी ऐस.पी. मदन मोहन सिंह, डी. आई. जी. फारुख़ खान एवं अन्य।



बावा कैलख देव जी पर आधारित भजनों की सी.डी. का विमोचन करते हुए मंडलायुक्त शांत मनु एवं अन्य।



संस्कृत दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए प्रो. आर. देवनाथन् एवं प्रबंधक कमेटी सदस्य।



मन्दिर परिसर में जनसुविधा केन्द्र का शिलान्यास करते हुए प्रवंधक कमेटी के संस्थापक स्व. संजय सेठ एवं अन्य।



कैलख दंगल में पहलवानों को आशीर्वाद देते हुए सुनील राका अज़गर, नदान सिंह रकवाल एवं ए.ई. गुलाम रसूल।



बावा कैलख दंगल में जनक सिंह रकवाल, श्री सुखदेव सिंह विधायक भारतभूषण जी को सम्मानित करते हुए।



एच.आर.डी. मंत्री भारत सरकार श्रीमती स्मृति ईरानी से भेंट करते हुए डॉ. सी.एम. रैणा एवं महन्त रोहित शास्त्री।



महामहिम राज्यपाल जम्मू-कश्मीर एन.एन. वोहरा जी को अपनी पुस्तक भेंट करते हुए महंत रोहित शास्त्री।



मन्दिर परिसर में प्रधान मन्त्री कार्यालय में निजि सचिव शक्ति पाठक, प्रो. रामानुज देवनाथन् एवं अन्य।



जम्मू-कश्मीर पी.एच.ई. मंत्री सुखनंदन चौधरी जी से भेंट करते बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी सदस्य।



मन्दिर परिसर में ध्वजा अरोहण करते हुए सांसद शमशेर सिंह मन्हास एवं प्रबंधक कमेटी सदस्य।



जम्मू-कश्मीर विधान सभा स्पीकर कवीन्द्र गुप्ता जी से भेंट करते बावा कैलख देव प्रबंधक कमेटी सदस्य।



मन्दिर परिसर में शक्ति पाठक जी, वाई.वी. शर्मा जी, प्रो. रामानुज देव नाथ, रोहित शास्त्री, डॉ. सी.एम. रैणा।



बावा कैलख परिसर में दाएं से श्री राधाकृष्ण जी, वाई.वी. शर्मा जी एवं महंत रोहित शास्त्री।



कैलख सराय का उद्‌घाटन करते हुए महामहिम राज्यपाल एन.एन. वोहरा एवं अन्य।



कैलख धर्म भास्कर पत्रिका का विमोचन करते हुए अतिथिगण।



प्रबंधक कमेटी एवं पतंजलि योग शिविर के अवसर पर मैराथन का उद्‌घाटन करते हुए भारत भूषण।



बावा कैलख देव दंगल में स्वास्थ्य मंत्री शाम लाल शर्मा का स्वागत करते दंगल कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में टाईल का कार्य पूरा होने पर उद्‌घाटन करते हुए वि. भारत भूषण एवं प्रंधक कमेटी सदस्य।



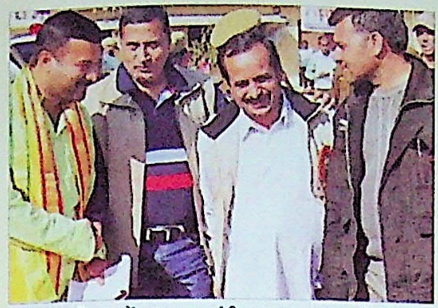
मन्दिर परिसर में भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री भारत सरकार प्रो. चमन लाल गुप्ता एवं प्रबंधक कमेटी सद स्य।



मन्दिर परिसर में श्री कुलदीप गुप्ता जी, शक्ति दत्त शर्मा जी, रोहित शास्त्री एवं अन्य।



बावा कैलख देव मन्दिर में अपने विचार रखते हुए राज्यपाल।



मन्दिर परिसर में स्वास्थ्य मंत्री शाम लाल शर्मा जी का स्वागत करते शक्ति दत्त शर्मा एवं मंहत रोहित शा स्त्री।



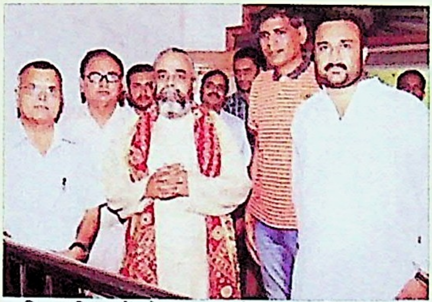
मन्दिर परिसर में डी.एस.पी. (जम्मू कश्मीर पुलिस) श्री संदीप मेहता को सम्मानित करते मंहत रोहि त शास्त्री।



मन्दिर परिसर में सांसद शमशेर सिंह मन्हास एवं अन्य।



मंडलायुक्त से भेंट करते बावा कैलख प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में प्रो. रामानुज देवनाथन् जी का स्वागत करते महंत रोहित शास्त्री एवं अन्य।



मन्दिर परिसर में ब्राह्मण देवता।



प्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा जी की जयंती मनाते प्रबंधक कमेटी सदस्य।



मन्दिर परिसर में वन एवं सोशल वेलफेयर मंत्री जम्मू कश्मीर सरकार बाली भगत साथ में मंहत रोहित शास्त्री।



कैलख धर्म दीवाकर पंचाग कैलेण्डर का विमोचन करते अतिथि।



व्रह्मा जी मन्दिर राजस्थान के मंहत श्री 1008 सोमपुरी जी महराज जी के साथ प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में सूबेदार मेजर तीर्थ राम जी को सम्मानित करते प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में भूतपूर्व रक्षा मंत्री भारत सरकार प्रो. चमन लाल गुप्ता जी एवं अन्य।



मन्दिर परिसर में भगवान् परशुराम जी की जयंती मनाते प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में शिव पूजा करते प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में अनिल गुप्ता जी, सरपंच राज देव सिंह एवं प्रबंधक कमेटी के सदस्य।



मन्दिर परिसर में भगवान् श्री हनुमान जी।



बावा कैलख देव यज्ञशाला।



बावा कैलख देव प्रकट मन्दिर का दृश्य।



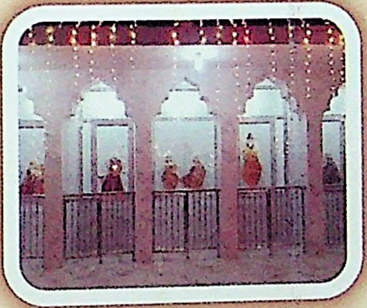
बावा कैलख देव की मुख्य प्रतिमा का दर्शन।



बावा कैलख देव मन्दिर का मुख्य द्वार।



कैलखेश्वर शिव मन्दिर



मन्दिर परिसर में पाँच नये मन्दिर– बाएं से शिव परिवार, माँ दुर्गा, विष्णु-लक्ष्मी, परशुराम एवं राधा-कृष्ण जी।

वातपित्रे बाबा कैलख देव

...ly on ill effects of drug addictio...



...TE TIMES NEWS

...U: Bawa Kailakh Dev ...lhak Committee on ... organised a rally to ... awareness among ...bout ill effects of drug ...n.

...ally was flagged by ...f Guest, SSP Crime ...akti Pathak which ...rted from Bawa Ji ... and culminated at ...gore. The rally was ...d under guidance of General Secretary Shak... Dutt Sharma, Presiden... Ram Paul Sharma.

Speaking on the occasion, the SSP advised society to come forward to cure the drug abuse from the Indian society.

Mahant Rohit Shastri, Sunil Seth, Yash Seth, Rajinder Seth, Sarpanch Rajdev, Ravi Kant Seth and Rajat Sharma were also present during the rally.

कैलख देव मंदिर में हनुमान जयंती मनाई

दोमाना (ब्यूरो)। श्री बाबा कैलख ज्योतिष एवं वैदिक संस्थान ट्रस्ट ठठर बनतालाब ने हनुमान जयंती मनाई। इस मौके पर संस्थान के प्रधान रोहित शास्त्री की अध्यक्षता में हवन यज्ञ का आयोजन किया। इसके बाद हनुमान प्रतिमा पर ... हजार फूल और फल चढ़ाए गए। संगत की ओर से भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। महंत रोहित शास्त्री ने बताया कि शांति और बुरी निय... को दूर भगाने के लिए हनुमान चालीसा का जाप करना चाहिए। इस मौके पर लंगर का आयोजन भी किया गया। इस मौके पर रामपाल सेठ, शक्ति दत्त शर्मा, जनक सिंह, यश सेठ, रजत सूदन केके शर्मा आदि उपस्थित थे।

आंखों का मुफ्त ...

दोमाना। बाबा कैलख देव देव स्थान ठठर ... मोहन लाल चेरिटेबल ट्रस्ट और ... र से ये कैंप लगाया गया था। ब... करीब लोगों की आंखों की जांच ... विशेषज्ञ डाक्टरों की टीम ने जांच ... लायसन अफसर पीडी संबयाल और ... ने बताया कि जिन लोगों की आंखों ... गया है। मौके पर ब...

... बनेगा ओवर हेड टैंक

दोमाना। बाबा कैलख देव ... परिसर में ओवर हेड टैंक ... नींव पत्थर रखा गया। बा... कैलख देव मंदिर प्रबंधक ... की ओर से दी गई जमी... इस टैंक का निर्माण कि... जाएगा। जिससे क्षेत्र ... पानी की समस्या का... आएगी। ठठ्र बनताल... वाले इस ओवर हेड ... पत्थर अनु गुप्ता ... महंत रोहित शास्त्री ... के बीच रखा।

बाबा कैलख नाथ मं...

कर्म ही सब... साधना है: शं...



ठाकरे के निधन पर दुख जताया

दोमाना (ब्यूरो)। बाल ठाकरे के निधन पर राज्य के लोगों में भी शोक की लहर दौड़ गई। विश्व हिंदू परिषद जम्मू कश्मीर के जिला अध्यक्ष और डोगरा ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा के महासचिव शक्ति दत्त शर्मा ने भी बाल ठाकरे निधन पर दुख प्रकट किया है। बाल ठाकरे के व्यक्तित्व ने न सिर्फ मुंबई वासियों के दिलों पर राज किया, बल्कि अपने व्यक्तित्व की छाप जम्मू कश्मीर राज्य के लोगों पर भी छोड़ी। उनकी मृत्यु से मुंबई की राजनीति में एक खालीपन पैदा हो गया है। आम आदमी की बात को लेकर चलने वाले इस इंसान का कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। इस मौके पर बाबा कैलख नाथ मंदिर के महंत रोहित शास्त्री ने भी दुख जताया है।

अमर उजाला

एमपी के पहलवान ने जीता दंगल

दस लाख का हुआ बाबा कैलखनाथ दंगल



4 दैनिक जागरण जम्मू, 16 सितंबर 20...

ऋषि मुनियों की धरती है भारत : श्री श्री रवि शंकर





स्वतंत्रता दिवस पर वृक्षारोपण

दोमाना। बाबा कैलख देव स्थान बनतालाब ठठ्र में स्थान की प्रबंधक कमेटी ने पौधरोपण कर स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस मौके पर नंबरदार सुखदेव सिंह, शक्ति दत्त शर्मा, रामपाल सेठ, नजीर हुसैन, मंदिर के महंत रोहित शास्त्री के अलावा अन्य लोग भी उपस्थित थे।

बाबा कैलख मंदिर में औषधीय पौधे लगाए

दोमाना (ब्यूरो)। ठठ्र बनतालाब स्थित बाबा कैलख देव मंदिर परिसर में पौधरोपण अभियान चलाया ... बाबा कैलख देव प्रबंधक कमेटी की ओर से चला... अभियान में दोमाना थाना प्रभारी जयपाल श... अभियान में भाग लेते हुए औषधीय पौधे ल... मौके पर प्रबंधक कमेटी के प्रधान राम ... मंदिर परिसर में चल रहे विकास कार्यों ... के बारे में जानकारी दी। मंदिर के महंत ... बताया कि मंदिर में बनाए गए पार्क में ... लोग सुबह सैर करने आते हैं। वाता... रखने के लिए औषधीय पौधों का ... प्रबंधक कमेटी के महासचिव ... उपस्थित लोगों को धन्यवाद दिया।

बावा कैलख देव मंदिर में सांसद मदन लाल शर्मा ने माथा टेका